१०५. मानव ही शांति, अशांति का धारक वाहक है, कारकता के साथ

०४-१०-२०१३

मानव ही अपने कर्मों से फलित रूप में शांति-अशांतियों को भोगता है और साथ में तीनों अवस्था में आवंटित करता है | प्राणावस्था, जीवावस्था और पदार्थावस्था इन तीनों अवस्था में परेशानियां पैदा करना, संतुलन बनाए रखने का अधिकार मानव में होता है | संतुलित बनाए रखने का अभी तक कोई निश्चित अध्ययन नहीं हुआ | इसे विकल्प संयत संतानों के साथ अथवा ग्राम कितने लोगों के लिये उपयोगी है इसको निश्चित करने की विधि से धरती का नियंत्रण, प्राणावस्था के जंगल का नियंत्रण, जीवावस्था का नियंत्रण होना स्वाभाविक है | इसी को पाने के लिये विकल्प प्रस्तुत है | विकल्प से ही इसका ज्ञान उपलब्ध हुआ; क्योंकि अभी तक दूसरा कोई विकल्प आया नहीं | फलस्वरूप ग्लोबल हार्मनी, ग्लोबल सिटिजन संतुलित रूप में जीना नहीं हो पाया | इसकी आवश्यकता बन चुकी है | जन मानस में इसकी जरूरत महसूस हो चुकी है | इसके अनुसार शिक्षा संस्कार को सोचना है | विकल्पात्मक शिक्षा-संस्कार ही समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व रूपी ज्ञानार्जन के लिये प्रस्तुत है | अनुभव के आधार पर ज्ञान, अनुभव सह-अस्तित्व में होना पाया गया है | सह-अस्तित्व होने के रूप में है | जीने के रूप में अथवा रहने के रूप में प्रमाणित होने के लिये तीन प्रमाणों को बताया है मानव ने | पहला प्रमाण अनुभवमूलक, दूसरा, तीसरा प्रमाण अनुभव सम्मत होना देखा गया | ऐसे ही प्रणालियाँ हैं | इसे भले प्रकार से हर व्यक्ति जाँच सकता है | तीनों प्रमाण प्रमाणित होना ही मानव परम्परा है | बाकी सब समुदाय परम्परा है | समुदाय परम्परा संघर्ष, युद्ध से मुक्त नहीं है | मानव परम्परा ही संघर्ष और युद्ध से मुक्त हो सकता है | साथ में भ्रम से मुक्त हो सकता है |

भ्रम के स्वरूप को तीन उन्माद के रूप में बताया है | ये लाभोन्माद, कामोन्माद, भोगोन्माद के रूप में होता है | मानव ज्ञानावस्था में होने के आधार पर यह अध्ययन शुरू होता है | लाभोन्मादी अर्थ व्यवस्था आवर्तनशीलता के रूप में परिवर्तित होने से सुगम होता है | व्यवहारवादी अर्थात न्यायवादी विधि से समाज, अखण्ड समाज रूप में प्रमाणित होता है | इसको अच्छी तरह से देखा है, समझा है, करने के क्रम में हम लगे हैं, मुख्य बात यही है | सर्वमानव इस विकल्प को जब तकभले प्रकार से अध्ययन नहीं करेगा, उनको यह नहीं मिलेगा | इसे सर्व सुलभ करना शिक्षा विधि से, शिक्षा विधि मानव परम्परा के अर्थ में है | मानव परम्परा ही तीनों प्रकार के आचरण सहज प्रमाणों को प्रस्तुत करता है | इस विधि से मानवही सुख, दुःख का धारक वाहक हुआ | सुख, दुःख संतुलन-असंतुलन का प्रतीक है | दुःख असंतुलन- का प्रतीक है | इस क्रम में मानव संतुलन को अपनाता है | इसी आधार पर विकल्प प्रस्तुत है | वातावरण के अनुसार मनुष्य जीना कब से शुरू किया है | जीवावस्था में इस प्रकार का व्यवस्था देखने को नहीं मिला | मानव ही सामान्याकांक्षा, महत्वाकांक्षा सम्बंधी वस्तुओं को पाकर जीवों से अच्छा जीने का प्रयत्न किया, जीवों से अच्छा जीना पर्याप्त नहीं हुआ |

इसी कारणवश विकल्प को सोचा गया | विकल्प के अनुसार, मानव धर्म एक होने की स्थिति में अखण्ड समाज सम्भव होता है | मानव धर्म एक होने क स्थिति में समाज एक अखण्ड समाज के रूप में समझ में होना पाया जाता है | इसे अध्ययन करा रहे हैं | मूल में यही बात प्राथमिक हुआ | मानव धर्म एक होने से, एक होना समझ में आने से सार्वभौम व्यवस्था के लिये प्रयत्न हो सकता है | दूसरा विधि से होता नहीं | सार्वभौमता, अखण्डता ही एकमात्र उपाय है | इसको पाने के लिये व्यवस्था ही एकमात्र आधार है | इस व्यवस्था को परिवारमूलक स्वराज्य व्यवस्था कहा है, जिसमें हर परिवार भागीदारी कर सके

और प्रमाणित हो सके | इस आधार पर विकल्प को प्रस्तुत किया है | विकल्प विधि से ही मानव व्यवस्था में जीता है | अव्यवस्था विधि से शासन में जीता है | शासन आदिकाल से प्रचलित है, उस समय के लिये ठीक रहा | इस समय के लिये ठीक नहीं है | आने वाले दिनों में हमें परिवर्तन को अपनाना ही पड़ेगा, तभी मानव व्यवस्था में परिवर्तन को ला पाता है | अपेक्षा तो बना ही है | ज्ञान न होने के कारण से कुंठित है मानव परम्परा | यह कुंठा तब समाप्त होगा जब विकल्प शिक्षा में उपलब्ध होगा | शिक्षा में सुलभ होने के फलस्वरूप मानव जाति एक होने का आधार सह-अस्तित्व रूप में होता है | सह-अस्तित्व विधि से ही मानव धर्म एक होना समझ में आता है | ये दोनों भाग समझ में आने से अखण्डता, सार्वभौमता होता है | मानव दुखी न होने के लिये उपाय बनता है | इसी के लिये विकल्प प्रस्तुत है |

इन आधारभूत सिद्धांतों को सह-अस्तित्व के आधार पर पाया है | सह-अस्तित्व नियति सहज है, नित्य सहज है, निरंतर सहज है | इसको अध्ययन करना आवश्यक है कि नहीं है, हर व्यक्ति सोच सकता है | आवश्यक है तब यह शिक्षा विधि में शुरू होने का व्यवस्था रखा है | इसमें कार्यक्रम हो रहा है शनैः शनैः | इस क्रम में गति धीमी लगती है | व्यवस्था विधि को अपनाने से ये कार्यक्रम अवतरित हो सकता है | व्यवस्था में अपनाने का मतलब सभी देश, सभी समय में मानव धर्म एक होने का अध्ययन को सुलभ कराना आवश्यक होता है, जिससे मानव जाति एक होने के आधार पर अखण्ड समाज होना स्वाभाविक है | मानव धर्म एक होने आधार पर मानव जाति एक होना समझ में आता है | मानव धर्म सुख है | सुखी रहने के लिये सम्पूर्ण कार्यक्रम करता है | इस क्रम में मानव अपने आशा के अनुसार जीने का विधि बनता है | जीने में ही प्रमाण होता है | प्रमाणपूर्वक जीने में हर व्यक्ति का अधिकार बनता है, जिसका प्रभाव अखण्डता, सार्वभौमता ही है | अखण्डता,सार्वभौमता विधि से ही मानव जाति एक होना, समझदारी एक होना, प्रमाण एक होना प्रमाणित होता है | इस क्रम में मानव अखण्डता, सार्वभौमता को सर्वसुलभ रूप में देख पाता है |

जय हो, मंगल हो, कल्याण हो |

- ए. नागराज | प्रणेता एवं लेखक | मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद) | दिव्य पथ संस्थान(भजनाश्रम) | अमरकंटक | जिला-अनूपपुर(म. प्र.)